[म]नुष्य बनो

वा०मू०
६-००

/७१

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

[ने]क कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

[...]त्र फकीर चन्द जी महाराज

[...]वता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार, सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २९	माघ सं० २०३५ वि० जनवरी, १९७९	संख्या ४

गुरू की दया

पृथ्वी मंडल को छोड़ दिया, भक्ति बल ले आकास चढ़ा ।
जब ब्रह्मरेन्द्र पर चढ़ आया, फिर सिखर मेरु कैलास चढ़ा ॥१॥

माया ममता घट से भागी, सोई हुई सुरत जागी ।
मिट गया अँधेरा अविद्या का, फिर विद्या के प्रकाश चढ़ा ॥२॥

चढ़ने चलने की तय्यारी की, सतगुरु ने मेरी रखबारी की ।
दृढ़ता से उदान का आसरा ले, घट गगन में साँसों साँस चढ़ा ॥३

सुन्न महासुन्न के पार गया, फिर भँवर की खिड़की जाके घुसा ।
सतपद में सतगुरु का दर्शन, ले मन में सच्ची आस चढ़ा ॥४॥

लख अलख अगम की गम पाई, ली राधास्वामी की शरनाई ।
यूँ ऊँचा शब्द का डोर पकड़, राधास्वामी का दास चढ़ा ॥५॥

Tour Programme of the Party accompanying his holiness Param Dayalji Maharaj

From : Place	Date	Departure Time	Train No.	To Place	Date	Arrival Time	Train No.	Remarks
Hoshiarpur	28-1-79	19-20	34 DN Mail	Delhi	29-1-79	5-00	34DN mail	
Delhi	29-1-79	19-30	6 DN 1xp.	Kazipet	30-1-79	21-5		
Secundrabad	7-2-79	20-55	32 DN Exp.	Bombay V. T.	8-2-79	13-50		
Bombay VT	12-2-79	16-30	5U.P. Mail	Bhopal	13-2-79	7-35		
Bhopal	15-2-79	6-30	34 DN Pas.	Ujjain	15-2-79	10-57		
Idore	20-2-79	16-50	72 DN	Ratlam	20-2-79	20-15		
Ratlam	20-2-79	20-43	23 UP	Delhi	21-2-79	12-55		

Tour Programme of holiness Param Dayal Faqir Chand ji Maharaj

From					To				
Place	Date	Departure Time	Train No.	Flight No.	Place	Date	Arrival Time	Train No.	Flight No.
Hoshiarpur	28-1-79	19-20	9JH/ 34DN	—	Delhi	29-1-79	5-00	Kashmir Mail	
Delhi	30-1-79	9-00	—	IC403	Hyderabad	30-1-79	10-55	—	IC403
Hyderabad	8-2-79	10-10	—	IC120	Bomby	8-2-79	11-25	—	IC120
Bombay	13-2-79	9-55	—	IC113	Bhopal	13-2-79	12-45	—	IC113
Bhopal	15-2-79	6-30	34DN Pass.	—	Ujjain	15-2-79	10-57	34DN Pass.	—
Ujjain	18-2-79	9-00	By Road		Indore	18-2-79	10-30	By Road	
Indore	21-2-79	12-15	—	IC460	Delhi	21-2-79	15-50	—	IC460
Delhi	22-2-79	9-00	By Road		Modinagar	22-2-79	10-00	By Road	
Modinagar	24-2-79	—	By Road		Aligarh/ Bilari	24-2-79	—	By Road	
Aligarh/ Bilari	26-2-79	—	By Road		Mathura	26-2-79	—	By Road	
Mathura	1-3-79	—	By Road		Delhi	1-3-79	—	By Road	
Delhi	3-3-79	20-50	33UP/4JH		Hoshiarpur	4-3-79	6-25		

धन्यवाद

श्री सेवाराम जी तराना २५) रु०
श्री तुलसीदास मोहनदास, इटारसी ११) रु०
श्रीमती सत्यवती पालीवाल, छिन्दबाड़ा २५) रु०

ने मनुष्य बनो की सहायतार्थ भेजे हैं, हम सभी बन्धुओं के आभारी हैं। जिन्होंने पत्रिका के संकटमय समय में दान भेजकर पत्रिका को चलाने में हमारा हाथ बटाया है। हम सभी बन्धुओं की सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

—प्रकाशक

निवेदन

जिन ग्राहक भाइयों ने पिछले वर्ष का चन्दा अभी तक नहीं भेजा है उनसे निवेदन है कि वे शीघ्र ही पत्रिका का पुराने वर्षों का व इस वर्ष का चन्दा भेजने की कृपा करें।

प्रकाशक

नया वर्ष मंगलमय हो

'मनुष्य बनो' पाठकों, ग्राहकों, संरक्षकों सभी को नये वर्ष की बधाई है। गत वर्ष भली प्रकार व्यतीत हो गया और परमपिता राधास्वामी दयाल से प्रार्थना करते हैं कि १९७९ के वर्ष को सभी जन मानस को सुख समृद्धि प्रदान करे।

प्रकाशक

प्रवचन

परम दयाल परमसन्त फकीरचन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर १९-३-७८

राधास्वामी !

मैं एक महीना १८ दिन दौरे पर लगा के आया हूं। पहला प्रश्न तो मैं अपनी आत्मा से यह पूछता हूँ कि तू यह काम क्यों करता है ? तेरी वृद्धावस्था है ९२ वर्ष की आयु है तेरा मतलब क्या है तेरा स्वार्थ क्या है ? मित्रो बात यह है कि छोटीसी आयु में अथवा सात वर्ष को ही आयु में, मैं पिछले कर्मों के अनुसार या कुदरत का खेल समझलो जिसने यह दुनिया बनाई है उसको मिलने वा जानने का विचार था। भिन्न भिन्न धर्मों खासकर भागवत वा रामायण के संस्कारों से उसको पूजता था। जैसा कि मैं कहा करता हूँ एक दृश्य द्वारा मैं दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलालजी महाराज के पास चला गया उन्होने सन्त मत दिया जब इस संतमत की वाणियाँ पढ़ीं उन्होंने इस दुनियाँ के पैदा करने वाले को जिसने यह संसार बनाया है उसको जालम और निर्दयी कहा है और यह कहा है जो इस ईश्वर की पूजा करता है वह कभी सुखी नहीं रह सकता और असल स्थान पर नहीं पहुँच सकता। ऐसा ऐसा वाणियां मैंने पढ़ीं हैं उन्होंने यह भी लिख दिया कि राम अवतार और कृष्ण भी नहीं पहुंचे मुसलमान भी नहीं पहुंचे हिन्दू भी नहीं पहुंचे, बुद्ध भी नहीं पहुंचे, जैन भी नहीं पहुंचे वेद पुराण भी गलत। मेरे लिये यह शब्द एक दुख का कारण थे। मगर मेरा विश्वास दाता दयालजी महाराज पर से नहीं गया क्योंकि उन्होंने यह सन्त मत दिया था तो मैं यह समझता था कि मैं ही नहीं समझ सकता, मेरे ही में कोई

दोष है। कोई इसमें सचाई जरूर है। इस विचार को लेकर मैंने अपना सारा जीवन व्यतीत किया और यह प्रण किया था कि मैं इस पथ पर सच्चा होकर चलूँगा। जो कुछ मिलेगा मुझको वह मैं पता जाऊँगा। जो कुछ मैं कर रहा हूं यह मेरा अपना कर्म भोग है मेरा किसी पर कोई अहसान नहीं है।

मैं यह काम करता हूँ अपनी बड़ी जिम्मेदारी महसूस करता हूँ क्या कहना चाहता हूँ। अपना अनुभव, कि जो कुछ सन्तों ने कहा है यह ठीक है। इस संसार को पैदा करने वाला वास्तव में बड़ा जालम है इसमें झूंठ नहीं। तुम देखो कि हरी सब्जी पैदा होती है उसको कीड़े खाते हैं। उसमें भी जान है एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है दूसरा कीड़ा तोसरे कीड़े को खाता है बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है इसी तरह से हर चोज एक दूसरे को हड़प कर रही है जीवन की स्थितियाँ व प्रति स्थितियाँ कैसी हैं। पाकिस्तान में वही भुट्टो जो किसी समय देश में राज्य करता था आज उसको फांसी की सजा मिली हुई है। वही इन्द्रा जो भारत की प्रधान मंत्री थी आज उसका क्या हाल है। वही मैं था चालीस साल पहले कितना जवान था अब चलना भी कठिन होगया है। मैंने चूंकि प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। अब मैं यह हौसले से कहना चाहता हूँ कि जिस शक्ति ने यह संसार बनाया है वह सचमुच बड़ा जालम है। उसने हमको संसार में पैदा करके दुख में डाल दिया। बच्चा पैदा होता है उसमें होश नहीं होती। बीमारी कुछ होती है किन्तु माता-पिता इलाज कुछ करते हैं। जब वह जरा बड़ा होता है वह खेलना चाहता है माता-पिता उसको पकड़ कर मारते हैं। कहते हैं! भई पढ़ो। जवानी आजाती है बुरे कामों में फँस जाता है। स्त्री (औरत) उसको काबू कर लेती है फिर वह बच्चे पैदा करता है। फिर उन बच्चों की देख भाल करता है सारी

उमर रोने धोने में ही गुजरती है तो यह दुनिया है क्या ? शोक और सन्ताप की जगह है तुम जमाने के हालात को देखो कैसे बदलते हैं। क्या किसी को एक रस जीवन रहता है ? हम लोग यत्न जरूर करते हैं 'यह करोजो–वह करोजो मगर उसका कोई लाभ नहीं होता। आज जो जवान है वह कल बूढ़ा है ! मैं उसे जानना चाहता था कि जिसका सन्तमत सब से बड़ा परमात्मा अथवा कुल मालिक मानते हैं, और साथ ही देखना चाहता था कि क्या वो जगह है जहां दुख सुख नहीं है। मेरी सारी उमर इसी खोज में गुजर गई। जगह का तो मुझे पता लग गया है। एक ऐसी जगह है जहां यह कर्ता पुरुष नहीं है जहाँ यह खुदा नहीं रहता जिसने यह दुनियाँ बनाई है वह एक जगह है, एक हालत है मगर मुझसे अभी तक वहाँ ठहरा नहीं जाता यह नहीं पता कि क्यों ? जिसने यह दुनिया बनाई है उसकी इच्छा है या मेरे कर्म हैं इसका मुझे पता नहीं। मैं इस बार बाहर गया हूँ क्या कह के आया हूं यही कह के आया हूँ कि जिस दुनियाँ में हम रहते हैं इस दुनिया का बनाने वाला जालम है। दुनिया ईश्वर की पूजा करती है अरे किस की पूजा करें ! क्या जो हमें पैदा करके हमारी जान को मुसीबत में डालता है उसकी पूजा करें ? अगर कोई भक्त राम का हुआ, कृष्ण का हुआ, गुरू का हुआ, अभ्यासी हुआ अगर वह दुख ना उठाता तो मैं मान जाता कि इस ईश्वर को भक्ती करने से कुछ हमें मिल जायगा। मैंने गुरुओं के हाल देखे, इतिहास पढ़लो। गुरु अर्जुन देवजी जिन्होंने लिखा है।

प्रभू सिमरन से पत वंते।
प्रभू सिमरन से धन वंते ॥
प्रभू सिमरन से दुख का नाश।
प्रभू सिमरन से दुश्मन टरे ॥

किन्तु उनके भाई ने उनके साथ दुश्मनी की। तो प्रभू सिमरन से क्या लाभ। दुश्मनी के भाव को टाल न सके यही एक प्रश्न है जिसका उत्तर किसी के पास नहीं। अच्छा अर्जुन ने गीता के १८ अध्याय श्री कृष्णजी के मुख से सुने मगर भागवत तो कहता है कि पाँचों पाँडव नर्क में गये। तो फिर कृष्णजी की पूजा करने से क्या बना ? मैं यह प्रश्न अपनी आत्मा से किसी पक्षपात खन्डन अथवा समालोचना की दृष्टि से नहीं कर रहा, किन्तु सचाई की खोज करना चाहता हूँ। कि What is the reality what is the truth ? श्री कृष्णजी ने अर्जुन को आशीर्वाद दिया था कि तू मुझे सब से अधिक प्यारा है मगर जब श्रीकृष्ण जी का देहावसान हुआ तो उनके कुल के सदस्य आपस में लड़कर मर गए। स्त्रियाँ रह गईं। अर्जुन गया उनको ले आया रास्ते में भीलों ने औरतें छीनलीं तो अर्जुन का धनुषबान किधर गया ? स्वामी रामकृष्ण परमहंस जो ईश्वर के भक्त कहलाते थे उनके साथ क्या हुआ ? मेरी बुद्धि काम नहीं करती मैं हार गया। मैं उस स्थान की तलाश करता हूं जहां जाकर मुझे कोई दुख न व्यापे ना यह संसार ही मेरे सामने आये। इस जग का पता तो मुझे लग गया मगर मैं वहाँ ठहर नहीं सकता। आज यत्न बहुत किया मगर खाँसी थी, छाती में धरड़ धरड़ होती थी।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या शिक्षा बदलूँ। पहली शिक्षा तो यह बदलना चाहता हूँ क जिस मालिक ने इस संसार को पैदा किया, उसने हमें अपने रूप का और अपनी इच्छा से पैदा किया। उसने पेड़, चांद, सूर्य अर्थात सब संसार बनाया। जैसे वह जालम है वैसे ही हम भी जालम हैं,

हम सन्तान अपने स्वाद, सुख और आराम के लिए पैदा करते हैं। किसी को क्या पता कि वे टी० बी० से मरेंगे या कैंद काटेंगे। मगर कोई सोचता है तो मुझे बताओ। मैं चाहता हूँ कि जो अनुभव मैंने किया है उसका निर्णय ये बड़े बड़े सन्त करें शायद मैं गलती पर हूँ। मुझे इस बात का दावा नहीं कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है। मैं स्वयं सोचता हूँ कि क्या मैंने जुलम नहीं किये? मेरी बड़ी लड़की पैदा हुई। मैं चाहता था कि मेरे यहाँ ऐसा बच्चा पैदा हो जो न कभी, क्रोधी, लोभी, मोही और न मानी हो। वैसी ही लड़की पैदा हुई। वह नीमउनमत है क्या मैं सुखी हूँ? क्या मैं दोषी नहीं हूँ? मैं दोषी हूं। इस वास्ते मैं कहे जाता हूं कि इस समय सन्तान का पैदा करना महान पाप है। जो ये बच्चा पैदा होते हैं ये Uncalled for Children हैं। संसार को विपत्ति में डालना है। आप स्वयं सोचो कि विपत्ति में हो या कि नहीं अगर मेरी माँ-बाप होते तो मैं पूछता हूँ कि तुमने मुझे क्यों पैदा किया। बुढ़ापा है, बानवे साल की आयु में कभी खांसी, कभी पेट दर्द, कभी खुजली और कभी कुछ है। यह संसार क्या है? सन्तों ने इस संसार से बचने के लिये जो इलाज बताया शायद वह गलत है या ठीक है। ...का निर्णय मैं अभी नहीं कर सकता इसका निर्णय मेरे मरने के ...द होगा। मैंने देखा राधास्वामी दयाल जिन्होंने ये शब्द कहे हैं ...छली आयु में दो साल बहुत बीमार रहे। चेलों ने कहा कि ...वामीजी ने ऐसी बीमारी लगा ली कि डाक्टरों और वैद्यों को पता ...ा लगा। उनकी बुद्धि को चक्कर में डाल दिया आखिर आरती ...कराकर सतधाम चले गये। मैं कैसे मानूं? कौन ऐसा आदमी है जो अपने अन्तर बीमारी पैदा करके संसार को चकित करे? ये जितनी बातें हैं तुम लोगों को मूर्ख बनाने के लिए घड़ी हैं।

मेरी तो आँखें खुलगईं । इस बार जब मैं भूदेव के गाँव में गया तो एक आदमी ने बताया कि बाबा आपने मुझे फाँसी से बचा दिया मैं उसकी बात को सुनकर चकित होगया। मैंने पूछा भई ! क्या बात है तूने क्या कहा ?. उसने कहा मुझ पर कत्ल का मुकद्दमा था। किसी ने आपका नाम बताया था। मैं आपका ध्यान करता रहा। आप मुझे कहते रहे कि तू बच जायेगा, तू बच जायेगा। मैं बरी होगया। अब जब मैं ऐसी बातें सुनता हूं तो अपनी आत्मा से पूछने का अधिकार नहीं रखता कि क्या तू उसके अन्तर गया था और उसे कहा कि तू बरी होजायेगा ? मैं नहीं गया। अगर सचमुच जो कुछ मेरे साथ गुरु बन के बीती अगर इन पिछले और वर्तमान गुरुओं के साथ भी ऐसा हो हुआ तो मैं निर्भय होकर अपनी जान को कुरबान करके कहता हूं कि ये पिछले और वर्तमान गुरु जिन्होंने हम गृहस्थियों को मूर्ख और पागल बनाकर लूटा और ठगा है कहीं नर्क में होंगे। मैं अगर शब्द का प्रयोग करता हूँ। मुझे पता नहीं, ये जाते होंगे। मैं कहीं नहीं जाता नहीं मुझे पता होता है। जो कुछ किसी को इस संसार में मिलता है वह उसका इस जन्म और पिछले जन्म का कर्म है।

नागी साहिब का तीसरा लड़का है, जिसने दो वार परीक्षा दी और असफल रहा। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तू गुरु बना हुआ है तू चाहता था कि यह पास होजाये। क्या तेरे विचार ने इसे पास कर दिया ? यह एक प्रश्न है। ये लोग मेरा मान करते हैं, नागी साहिब ने आरती उतारी तो मेरे सिर पर कोई जिम्मेदारी है कि नहीं। मैं वह जिम्मेदारी पूरी कर जाना चाहता हूँ। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मेरा अनुभव होगा संसार को बता जाऊँगा। दता दयाल ने आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना। पता नहीं उन्होंने मेरे दिल को रखने के लिये सच्ची या झूठी आज्ञा

दी यह वह जानते होंगे मुझे पता नहीं। मगर मैंने देखा कि दाता दयाल की धाम उजड़ गई अगर वह सचमुच हो चौथे पद या काल से परे रहते थे तो वह धाम को क्यों न बचा सके ?

आप लोग आते हैं मैं चाहता हूं कि मेरे भाषण बड़े बड़े महा-पुरुष पढ़ें और बताये कि मैं गलत हूं या ठीक हूँ। जब मैं बड़े बड़े सन्तों के हाल देखता हूँ तो काँप जाता हूँ। मैंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस की दशा देखी, जिनमें बड़ी शक्ति थी और उनके बड़े बड़े चेले स्वामी विवेकानन्द जैसे थे कैंसर Cancer से मरे और उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। लोग कहते हैं कि सन्तों को कष्ट नहीं होता। यह सब वकवास और बहाना करते हैं। कौन कहता है कि सन्तों को कष्ट नहीं होता ? मैं भी यही समझता था। किताब में लिखा है कि जब बाबा सावनसिंह जी बीमार हुए और उन्हें टीका लगाया गया तो कहने लगे, 'हाय आये' तुमने मुझे जहर दे दिया।' अगर इन्हें कष्ट न होता तो क्यों कहते जब मैं बीमार होता हूँ तो क्या कष्ट नहीं होता ? होता है। जब मैं एक बार धाम गया तो दाता-दयाल कपड़ा लिए हुए लेटे थे। मैंने प्रेम वश उनके पाँव पर सिर रखा। उन्होंने हाय कहकर टाँग पीछे खींचली। मैंने पूछा महाराज क्या हुआ। कहने लगे मैं ईंटें लेजा रहा था। ईंट मेरे पाँव पर पड़ी और घाव होगया। ऐसी रोचक और भयानक बातें कह कर हम गरीब गृहस्थियों को इन महात्माओं, धर्म वालों, पंथवालों, गुरुओं, मन्दिरवालों, ब्राह्मणों और मौलवियों ने मूर्ख बनाकर लूटा है। हम कुछ नहीं जानते। हमारी तो यह बात है—

जिस नाल करां गल्ला।
उस बाल उठ चला॥

कहावत है कि जिससे बात करो उसके साथ चल पड़ो।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। यह दावा

नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है। अगर मैं गलत हूँ तो मैं संसार के गुरुओं को कहता हूँ कि मेरा खण्डन करो। मैंने सारी आयु खोज में व्यतीत करदी अपना सारा जीवन सचाई ढूँडने के लिए लगा दिया कि हकीकत क्या है? मानव को कहाँ शान्ति है? अगर सन्तों को मरते समय शान्ति मिल जाती और उन्हें कोई कष्ट न होता तो मैं मान लेता कि ईश्वर की भक्ति करने से कुछ लाभ हो सकता है। मैंने सुना है कि नामदेव के सिर को मुसलमानों ने गाय के चमड़े के बीच दे दिया। बड़े बड़े महात्माओं को कितने दुख हुए तो फिर क्या करना चाहिये मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ आप दोस्तों से कुछ नहीं कहता। इस गुरुआई को आग लगे, मैंने इससे क्या लेना है। आप लोगों को कहना चाहता हूँ कि मैंने यह समझा है। आप अपने अपने गुरुओं और महात्माओं को पूछो कि एक बूढ़ा आदमी पागल होगया है, वह यह कहता है तुम बताओ सच है या झूठ है। कबीर साहिब जिन्होंने इतने ऊँचे ऊँचे शब्द लिखे मैंने उनकी जीवन चरित्र पढ़ा है। पिछली आयु में वह साड़े दस साल दर्द गुर्दा से बीमार रहे तो मैं क्या कहूँ और किसको कहूँ। ऐसा कोई उपाय है कि जिससे इस संसार के चक्कर से बच जाये?

पहला उपाय यह है कि ऐ मानव! तू सन्तान पैदा मत कर अगर सन्तान चाहता है तो उन सिद्धान्तों के अनुसार पैदा कर जो तेरे लिए लाभदायक हों। एक आदमी टी० बी० आंतसिक या किसी या किसी और बीमारी में ग्रस्त है। वह स्त्री के पास जाता है और बच्चा पेट में आजाता है तो क्या यह बच्चा स्वस्थ रहेगा? नहीं वह बीमार रहेगा? नहीं। वह बीमार रहेगा। मैंने किसी जगह बड़े बड़े सिरों वाले और छोटे छोटे बच्चे देखे। उन्हें देख कर डर

लगता था। डाक्टरों ने उनके आपरेशन भी किये लेकिन कुछ न बना। यह काम का अंग इतना प्रबल है कि जिसने सारे संसार को बरबाद कर दिया। हम दुखी हैं। मैं बाहर जाता हूं कोई आदमी भी मैंने ऐसा नही देखा जो दुखी न हो। किसी को लड़के का दुख, किसी को भाई का दुख और किसी को स्त्री का दुख। मैं खोजी Research हूं मैं देखना चाहता हूँ कि सचाई है कहाँ ? सुख और शान्ति कहां मिलती है ? कोई बताता नहीं। लोग सन्यासी और साधु हो जाते हैं। इनसे पूछो कि क्या उन्हें शान्ति मिल गई है ? मैं माषण देता हूं। संसार वाले मेरे भाषण को सुनकर चकित हो जाते हैं। लेकिन जब मेरे शरीर को कष्ट होता है तो नानी याद आजाती है। लोगों को उपदेश करना आसान है लेकिन अपने आप अमल करना कठिन है। यही बात स्वामीजी ने कही है। इस संसार के बनाने वाले यहाँ तक कि ब्रह्म और पारब्रह्म का भी खण्डन किया है। मैं एक साधारण ब्राह्मण के घर पैदा हुआ, अगर मैं स्वामीजी, कबीर साहिब की किताबें न पढ़ता तो कभी भी सन्तमत में न आता। कौन आदमी अपने पूर्वजों की बुराई सुन सकता है। अगर किसी सिख को गुरु नानक साहिब के विरुद्ध कुछ कहा जाये तो वह कृपान निकाल कर सिर उतार देगा। अगर किसी मुसलमान को कुरान सरीफ या मुहम्मद साहिब के विरुद्ध कहा जाये तो देखो।

मैं स्वयं देखना चाहता था कि जो कुछ सन्तों ने अन्तिम अवस्था बताई है, क्या वह है या कि नहीं ? या उन्होंने भी हमारे साथ चारसौ बीस की है ? अब मैं महसूस करता हूँ कि ये महात्मा जो कुछ कहते हैं मैंने इससे उलटा समझा यद्यपि पाँच उगलियाँ बराबर नहीं होतीं, हर जगह Exception है। लोग कहते हैं, नाम लेलो गुरु तुम्हें अन्त समय लेजायेगा। अरे दिवानो ! हम लोगों के साथ इन गुरुओं ने इतना धोखा फरेब और चारसौ बीस की है कि हम

फँस गये। हम लोगों ने अपने बच्चों के पेट काट कर इन गुरुओं के मन्दिर, आश्रम और डेरे बनाये केवल इस विचार से कि गुरु अन्त समय ले जाता है या हमारा गुरु बाबा फकीर ले जायेगा यह बिल-कुल झूठ है। लोग मरते हैं, कोई कहता है घोड़ा लेकर आया कोई कहता है पालकी और कोई हवाई जहाज बताता है लेकिन मेरे तो बाप को पता नहीं होता कि कौन मर गया। यह मैं जानता हूँ कि गुरु लेजाता है लेकिन वह बाहर का गुरु बाबा फकीर या कोई आदमी नहीं है। वह गुरु, ज्ञान, समझ और विवेक है जिस प्रकार की श्रद्धा, विश्वास और विचार तुम्हारे मस्तिष्क पर बैठा हुआ है वह तुम्हें ले जायेगा। लेकिन हमें इसके उलटा बताया गया कि नाम ले लो अन्त समय तुम्हें बाबा फकीर या और गुरु ले जायेगा। अब हर महीने आकर बाबा फकीर के मन्दिर को देते रहो, बाबे फकीर को मोटर गाड़ियों पर चढ़ाते रहो। यह जुलम और अनर्थ देखकर प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया और मैं स्पष्ट वर्णन करने के लिए विवश होगया। अगर मैं गलत हूँ तो दूसरे बतायें। आज दिन यह काम करते हुए छत्तीस साल होगये किसी ने भी मुझे यह नहीं कहा कि मैं जो कुछ कहता हूं यह गलत है। गुरु लेजाता है लेकिन वह गुरु बाहर बैठा बाबा फकीरचन्द नहीं हैं। ऐसी गुरुआई को आग लगे। अगर मैं आपको सच्ची बात नहीं बताता तो आपका दिया हुआ पैसा मन्दिर को खाजायेगा। जो इस धन को खायेगा उसका सत्यानाश हो जायेगा क्योंकि उसमें धोखा फरेब और झूँठ होगा।

इस संसार को बनाने वाले को सन्त जालम और निर्दई कहते हैं। मैंने इस बात की खोज करने में आयु व्यतीत करदी कि क्या सचमुच जो इन्होंने कहा यह ठीक है और सन्तों का कोई ऐसा भगवान है जिसे ये सर्वाधार कहते हैं। तुम सन्तों की बाणी को पढ़ो

उसमें लिखा है माल के कुल, सन्त के कुल माल के कुल है भी या नहीं या कबीर, राधास्वामी दयाल और सन्त केवल बड़ाई करवाने के लिए ही दूसरों का खण्डन कर गये ? वह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूँ। आज स्वामोजी को वाणी द्वारा उसका उत्तर देता हूं—

भार खाना चौपड़ जग रची।
अन्ड जेर सेदज, उदाभिज;
माया ब्रह्म पुरुष पिराकेरती,
मन इच्छा खेलें शिव शक्ति,
सुरत नर्दता में बंहु पची,
तीन गुनन का पासा लीन्हा,
रज गुन तमगुन सतगुन बान्हा,

मैं आप लोगों को कुछ नहीं कह रहा। ऐसा क्यों कहता हूं ? आप लोगों का मैं आभारी हुं क्योंकि आपके आने से मुझे अपने कर्म काटने का अवसर मिल जाता है। क्या मैं किसी पर एहसान करता हूँ ? बिलकुल नहीं। मैं अपने आप से पूछता हुँ फकीरचन्द दाढ़ी बढ़ाली है और लोगों को उपदेश करता है, तू बता, क्या तुझे माया का पता लग गया कि माया और ब्रह्म क्या चीज है ? जितनी बुद्धि मुझे मिली हुई है उसके अनुसार कहता हूं, दावा कोई नहीं। उदाहरण द्वारा समझाता हूँ जिस प्रकार जमीन में नमी है, उसमें बीज डालो, उस पर सूर्य की किरणें पड़ने से अंकुर पत्ते फूल और फल पैदा हो जाते हैं उसी प्रकार जब प्रकाश शरीर में आता है तो ऐसे ही बोध भाव पैदा हो जाते हैं। घेंज मछली के और बोध भान साँप के और बोध भान, बिच्छू और मानव के और बोध-भान ने जो बोध भान (Feelings) पैदा होती है Physical mental

and Spritual feelings माया है। मा अर्थ मापना और या अर्थात यन्त्र जिससे कोई चीज मापी जाती है। वह हमारे अन्तर हमारी बुद्धि है। प्रकाश, आद माया है यह चार प्रकार की सृष्टि अर्थात बनास्पति, पशु, पक्षी और मानव को बनाती है और अकल मानती है। मैं यह कहूँ कि प्रकाश न हो तो संसार नहीं बन सकता यह ठीक है। अगर कोई चहे कि वह प्रकाश में सदा रहे और फिर इस रचना से बच जाये तो यह असम्भव है क्योंकि प्रकाश, ब्रह्म, पुरुष और प्रकृति का यही काम है। प्रकाश फैलता है, बत्ती जलाओ उसकी रोशनी होगी। इसलिये जो आदमी सारी आयु प्रकाश को देखते रहते हैं और प्रकाश या ब्रह्म को अपना इष्ट मानते हैं अगर वे चाहें कि वे सदा के लिये इस संसार से बच जाये तो वे बच नहीं सकते। रामायण और भागवत में लिखा है कि जब कृष्ण अवतार हुआ तो वह ब्रह्मलोक से आया और वहां जो रूहें थीं वह कोई गोप बना, कोई गोपी बनी और कोई कुछ बना ऐसे ही कोई सुग्रीव बना, कोई हनुमान और कोई कुछ बना। सच है या झूंठ यह हमें पता नहीं। तुम प्रकाश का साधन करते हो तुम प्रकाश में चले जाओगे जब उसकी मौज होगी तो तुम्हें फिर आना पड़ेगा। इस बात को मेरी बुद्धि मानती है। इसलिये प्रकाश सन्तों के मार्ग में अन्तिम अबस्था नहीं है अर्थात ब्रह्म या ईश्वर जो संसार को पैदा करता है यह अन्तिम अवस्था नहीं है। प्रकाश तो ईश्वर ही है जो संसार को पैदा करता है। अगर तुम ईश्वर के साथ ही लगे रहोगे तो कुछ समय के लिए तुम्हें मुक्ति मिल जायेगी लेकिन जब उसकी इच्छा होगी तो तुम्हें फिर वापिस आना पड़ेगा।

सुरत नर्दता में बहु पची।
धूम खेल की प्रति कर मची ।।

इस बात को समझने के लिये कि सुरत क्या है मैंने सारी आयु

खोदी । कई वर्ष बीत गये, पता नहीं लगता था। क्यों ? मैं तो दाता दयाल के मुखड़े, ईश्वर या परमात्मा से प्रेम करता था। जो चीज प्रेम करती है वह सुख है। मेरी दृष्टि अपनी ओर तो जाती नहीं थी। मेरा ध्यान गुरु के स्वरूप, प्रकाश, शब्द दृश्यों या सिद्धि शक्ति की ओर जाता था तो मुझे सुरत का कैसे पता लगता। यह असम्भव था। यह पता मुझको दाता दयाल और या आप लोगों की दया से लगा। मैं दाता दयाल को तंग किया करता था कि मुझे वह जगह बताओ जिसे राधास्वामी या कबीरमत बताता है। वह कौनसी जगह है ? उन्होंने १९१८ में मेरी गोद में पाँच पैसे और नारियल डाल कर मुझे मत्था टेक कर कहा था कि तुझे सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा जो तुम्हें उस मंजल पर पहुंचा देगा। अब वह मिल गया। जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप तुम लोगों के अन्तर प्रकट होता है मगर मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास होगया कि जो उनके अन्तर बाबा फकीर, बाबा सावनसिंह, राम या कृष्ण आया वह उनका अपना ही मन और माया थी। अरे ! कभी अपने सुना कि किसी हिन्दू को अभ्यास में मुहम्मद साहिब दिखाई दिये या ईसा मसीह दिखाई दिए या किसी मुसलमान को राम, कृष्ण सीता या हनुमान दिखाई दिया ? नहीं ! नहीं !! नहीं !!! क्या किसी स्त्री को ऐसा स्वप्न आया है कि वह पुरुष बन गई, उसने विवाह किया और बच्चे पैदा किये ? क्या आपको कभी ऐसा स्वप्न आया कि आप स्त्री बन गये ? जिस जिस प्रकार का संस्कार तुम्हारे मस्तिष्क पर पड़ा हुआ होता है वही दिखाई देता है। मैंने जो कुछ समझा है शायद गलत हो लेकिन मेरी नीयत साफ है। यह दावा करना कि किसी आदमी का कि उसे सारे संसार की हालत का पता है। मैं तो यह कहता हूं कि न कबीर साहिब को, न स्वामीजी को और न मेरे जैसे फकीर को पता लगा। प्रकृति के

भेद को कोई नहीं जान सकता। जितना जितना किसी को अनुभव हुआ उसने लिख दिया। क्या चारखान चौपड़ है ? यह बनाने वाला प्रकाश है। जब तक कोई आदमी प्रकाश में रहता हुआ मरता है उसे अच्छा जगह मिलेगी और अच्छे देश में जायेगा। क्या वह देश है ? हाँ ! है। मैं क्यों कहता हूँ ? जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है, मैं तो होता नहीं तो मेरे अन्तर जितने रंग रूप या शकलें पैदा होती हैं उनको छोड़ जाता हूँ क्योंकि मुझे विश्वास होगया कि जब मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता तो कोई दूसरा गुरु भी नहीं जाता है। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ ? क्योंकि बाबा चरनसिंह, सन्त कृपालसिंह और तीन चार महात्माओं ने मेरे सामने माना कि वे नहीं जाते तो मुझे विश्वास होगया। मगर वे पब्लिक को नहीं बताते यह ठीक है कि पिछले महात्मा नहीं गये और इस राज को छुपो गये तो तुम लाख कहो वे सतलोक चले गये, मैं तो कहता हूँ कहीं नर्क कुण्ड में होंगे कितना धोखा हमें दिया गया। हम गृहस्थियों को मूर्ख बना कर लूटा जा रहा है। अपनी मान प्रतिष्ठा धन धान्य के लिये कोई सच्ची बात नहीं बताता। स्वामी जी ने ठीक कहा है—

सुरत नर्दता में वहु पची।
धूम खेल की प्रति कर मची ॥

एक तो बाहर के संसार का खेल है दूसरे हमारे अन्तर का खेल है अर्थात चाँद, सूर्य, सितारे बाहर का संसार और हमारे मानव संकल्प और विचार अन्तर का खेल है। आपके चरणों की मिट्टी सिर पर रखने से मुझे पता लग गया कि जो कुछ भी मेरे अन्तर प्रकट होता है असल में यह है नहीं केवल माया है Impressions and Suggestions हैं। हम उनको सच मानकर उनमें फँस जाते हैं। एक भगवान का खेल बाहर का है और दूसरा भगवान हमारे अन्तर हमारा मन है। वह खेल खेलता रहता है। जो कुछ मैं कह रहा हूं

यह भी तो खेल ही है। सुरत क्या है? इसका पता आप लोगों की दया से लगा। जब से पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मैं मन को छोड़ जाता हूं। मन को छोड़ने के बाद आगे प्रकाश और शब्द है। जो चीज प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह सुरत है। वह तुम और हम हैं। इसका मुझे पता नहीं लगता था। मैं तो सारी आयु दाता दयाल के रूप को ही पूजता रहा। पहले बचपन में राम को पूजता रहा फिर गुरू के रूप को पूजता रहा मगर सुरत का पता नहीं लगता था। दाता दयाल ने कहा था कि तुझे सच्चा सतगुरु, सत्संगियों के रूप में मिलेगा। तुम लोगों की दया से मुझे सुरत के रूप का पता लग गया। अब मैं कोशिश करता रहता हूँ कि सुरत को जो कुछ भी मेरे अन्तर है उससे अलग करलू कभी दो या तीन महीने में जब सुरत अलग हो जाती है तो फिर क्या होता है? क्या कहूँ क्या होता है। जो कुछ सन्त कह गये वह होता है—

जेठ महीना जेठा भारी।
जीवन हिरदे तपन करारो॥
सन्त दयाल जीव हितकारी।
भेंट कहें अब निज कर भारो॥
नहीं खालिक मखलूक न खिलकत।
करता कारन काज ने दिक्कत।
राम रहीम करीम न केशो।
कुछ नहीं कुछ नहीं कुछ नहीं था सो।

जब वह चीज अपने आदि में चली जायेगी फिर वह जात हो जायेगी अर्थात अपनी हस्ती Individualty अपना आप गुम कर देगी। यह उपाय इस संसार से बचने का है इसलिए सन्त कहते हैं Know thy self by thy self

आप आपको आप पहचानो ।
कहा और का नेक न मानो ॥

गुरु नानक साहिब कहते हैं—

कहे नानक बिन आपा चीने, मिटे न भरम की काई ।

मुझे पता नहीं कि राधास्वामी, दाता दयाल य गुरु नानक साहिब ने अपने आपको क्या पहचाना ? आप सत्संगियों की दया से जब यह पता लगा कि मेरा रूप आपकी सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता तो मैं मन को छोड़ जाता हूँ मगर जब कभी कोई शारीरिक कष्ट होता है तो मुझे नानी याद आजाती है। मैं सुरत को अलग नहीं कर सकता, बहुत कोशिश करनी पड़ती है। सांसारिक दुख की मैं शायद इसलिये परवाह (चिन्ता) नहीं करता क्योंकि प्रकृति ने मेरा प्रबन्ध किया हुआ है। मेरी सेवा होती है। अढ़ाईसौ मेरा लड़का भेज देता है, दो सौ कटनी वाले भेज देते हैं, एक सौ दुर्गादास चण्डीगढ़ वाला भेज देता है इससे मेरे घर का खर्च चलता है। अगर मुझे ये रुपये न आते और फिर मैं इस अवस्था में होता तो मेरी बहादुरी थी। इस वास्ते मैं संसार को धार्मिक शिक्षा नहीं देता। मैंने सबसे पहले 'मनुष्य बनो' की आवाज उठाई है। सबसे रोटी का प्रबन्ध करो। जिसके पेट में रोटी नहीं उसे ईश्वर से क्या मतलब। सब झूठ है।

प्रागन्दा रोजी प्रागन्दा दिल

जिसका रोटी का प्रबन्ध नहीं है वह भगवान को याद नहीं कर सकता और न सन्तमत का अधिकारी हो सकता है। स्वामीजी को क्या पता कि जिसके घर प्रातः के लिए रोटी का प्रबन्ध नहीं है उसकी क्या दशा होती है। वह कुछ नहीं जानते थे क्योंकि वह अमीरों के घर पैदा हुये थे। भाई ऐसा मिला था कि वह सेवक था। राय साहिब जैसे चेले जो कन्धों पर उठाये फिरते थे। इसलिये मैंने

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

शिक्षा को बदल दिया दाता ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना मैं बदले जारहा हूँ सब से पहले रोटी का प्रबन्ध होना चाहिये पीछे सब काम। कई सन्यास धारण कर लेते हैं। वे ठूढा हाथ में लेकर दूसरों के घरों का टुकड़ा माँगते हैं। यह क्या है ? वे काम नहीं करते, बेकार बैठ जाते हैं। वे समझते हैं कि ऐसा करने से हमें मालिक मिल जायेगा। यह सब बकबास है। पिछला समय और था उस समय जब लोग संन्यासी हो जाते थे तो गृहस्थियों के सिर पर एक जिम्मेदारी होती थी। उस समय यह नियम था कि अगर कोई सन्यासी, साधू या महात्मा किसी गाँव में चला जायेगा तो उस गाँव के लोग उसका प्रबन्ध करें फिर उसे आज्ञा थी कि तीन दिन से अधिक वह उस जगह न रहे ताकि गृहस्थियों पर बोझ न पड़े। अब जमाना (समय) बदल गया। अब ऐसी बात नहीं है। स्वामी जी कहते हैं—

चार खान चौपड़ जग रची,
अन्ड जेर सेदज उदभिजी,
माया ब्रह्म पुरुष प्रकृती।
मन इच्छा खेलें शिव शक्ति।
सुरत नर्द ता में वहु पची।
धूम खेल की अति कर मची।

ठीक है यह संसार खेल है और हमारे अन्तर हमारा मन भी खेल करता है।

तीन गुनन का पासा लीन्ह।
रजगुन, सतगुन, सतगुन चीन्ह।

यह क्या है ? ये Feeling of mind है। ये मन के बोध भान की अवस्थायें हैं, तमोगुण, रजोगुण और सतोगुण जिनका मन शान्त रहता है वे रजोगुण हैं, जिनका मन चंचल है अर्थात

तरह तरह के विचार उठाता रहता है वे रजोगुण हैं और जिनका मन आलसी, कुछ हिम्मत नहीं करता वे तमोगुण हैं। यह हमारे मन की दशा है। यह किसने बताया? यह प्रकाश और ब्रह्म ने बनाया क्योंकि उसका यही काम है।

कर्म हाथ से पासे डारे।
भोग अंक ला में विस्तारे।

हम वासना करते हैं। वासना से कर्म और इच्छा पैदा होती है जिससे हम कर्म करते हैं। इससे यह सारा क्रम चलता है।

झूठी वाजी जानी सच्ची, कोई पक्की कोई मारे कच्ची।

यह वाणी मेरी समझ में नहीं आती थी। मैं मालिक के आगे रोया करता था कि ऐ मालिक! मैं तुझे मिलने निकला था, मैं कहाँ फँस गया। झूठी और सच्ची बाजी क्या है? जब आप कहते हैं कि मैं आपके अन्तर प्रकट हुआ मैं तो होता नहीं आप मुझे समझते हो क्या वह झूठी बाजी नहीं है? तुम समझते हो तुम्हारे अन्तर राम आगया। बड़े हँसते और प्रसन्न होते हो हालाँकि वह राम नहीं है। अगर तुलसीदास, रामायण के लिखने वाले को सचमुच असलराम दिखाई देता तो वह पिछली आयु में तीन साल क्यों बीमार रहते, जो लिखते हैं—

चित्रकूट के घाट पर, भई सन्तन की भीड़।
तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुवीर॥

वह असलीराम नहीं था, वह उसका अपना ही मन था। उसने झूठी बाजी सच्ची समझी। इसलिये उसको कष्ट हुआ। मेरे साथ क्या हो मुझे पता नहीं I dont know how I will die मुझे इतनी प्रसन्नता अवश्य होगी कि मैंने इस जन्म में कोई धोखा फरेब और चारसौ-बीस नहीं की सिवाय काम अंग के, क्योंकि मेरा छोटा आयु में विवाह होगया था जिसमें मेरा कोई दोष नहीं था।

नर्द सुरत चौरासी घर में,
भरमत फिरें दुक्ख और सुख में।

वो भी सुरत इस ज्ञान के विना उसे सच मानती है जो हमारे अन्तर प्रकट होता है इसका आम चौरासी के घर में फरना फरगवा फिरबा है। दुख और सुख उठाना है। फिर मुक्ति कौन देता है? गुरु का ज्ञान मुक्ति देता है गुरु, मुक्ति नहीं देता गुरु का ज्ञान मुक्ति देता है यही स्वामीजी ने कहा है—

गुरु ज्ञान न पाओरी सखी, तेरी यूं ही उमर विहानी।

शास्त्र भी यही कहते है कि ज्ञान विना मुक्ति नहीं। वह ज्ञान यह नहीं कि मैं खुदा या ब्रह्म हूँ। अहं सत्यं बल्कि यह कि मैं हूँ कौन? मैंने यह समझा कि मैं सुरत हूं, वह न प्रकाश है न शब्द न मन और न शरीर है। वह सबकी साक्षी है। मगर यह भूल जाता है। जो कुछ वव देख रही है यह झूठी बाजी है लेकिन वह अन्तर में उसको सच्ची समझती है। इस सचाई को बताने के लिए सन्तों का प्राकट्य होता है और बे जीव को ज्ञान और सार बता कर इस चक्कर से निकालने का यत्न करते हैं। स्वामीजी ने यही कहा है—

गुरु ने अब दीना भेद अगम का।
सुरत चली तज देश भरम का॥
भटकत छूटा देहरो हरम का।
संशय भागा जनम मरन का॥

ऐसे शब्द स्वामीजी ने लिखे—

झूठी बाजी जानी सच्ची, कोई पक्की कोई और कच्ची।

यह क्या है? स्वामीजी को पता होगा कि उनका क्या भाव था। मैं तो जानता नहीं मगर यह समझता हूँ कि जो पासा खेलते हैं उसमें चौरासी घर होते है। जब हम गोट को पका लेते हैं तो

उसे बीच में रख देते हैं जब चाहे उसे निकाल कर खेल में ले आते हैं। आपकी गोट आगे पड़ी है। मैं पीछे से गया, मैंने गोट पकड़ी बढ़ी हुई गोट को ढ़क मारा और बाहर निकाल दिया। कई बार ऐसा होता है कि पौ पूरा पड़ा हुआ होता है। गोट प्रकाश में लीन हुई होती है। उसे खिलाड़ी वहां से लेकर उससे दूसरी को निकाल कर उसे कच्ची कर देता है। इस प्रकार ब्रह्म जो काल पुरुष है वह रचना करता रहता है और इसमें सुरतरूपी अंश फँसी रहती है और दुख सुख भोगती है।

नर्द सुरत चौरासी घर में,
भरमत फिरे दुक्ख और सुख में।
हारे ब्रह्म जीती माया।
जींव नर्द बहु विधि दुख पाया।

कैसे ब्रह्म हारे और कैसे माया जीती यह तो वह जानते होंगे मैंने जो समझा अपने कर्म भोगवश कहता हूँ। जब आदमी मरने लगता है तो कोई भाग्यशाली ही होता है जिसके सामने प्रकाश आता है, नहीं तो सबके सामने रूप आते हैं किसी के सामने गुरु, गाय, पुत्र, स्त्री, चचा ताया या गाँव अर्थात भाव यह कि मरने वालों के अन्तर प्रायः रूप ही आते हैं। भगत जन को राम या कृष्ण आगया। वे राम कृष्ण तो नहीं थे माया थी। वह कहते हैं कभी कभी ब्रह्म की जीत होती है अन्यथा ब्रह्म हारता है और माया जीतती है। ब्रह्म प्रकाश है। कोई भाग्यशाली ही होगा जिसके सामने अन्त समय प्रकाश आयेगा और वह प्रकाश में लीन हो जायेगा अगर रूप आया और उसने उसे सत्य माना तो माया के चक्कर से नहीं निकल सकता जो इच्छा हो करता रहे। मुझे पता नहीं मेरा क्या परिणाम होगा, मैं कोशिश करता रहता हूँ।

प्रश्न–क्या सच कोई ऐसा उपाय है (उपाय है) जिससे हम इस

चक्कर से बच जायें ?

उत्तर—मैं दावा तो किसी बात का करता नहीं मगर बुद्धि मानती है और विज्ञान ने सिद्ध किया है कि मरने वाले को एक Sensitive Scale पर रखा। जब उसकी जान निकल गई तो कोई १५ कोई बीस और कोई बत्तीस ग्राम घटा और जो चीज अन्तर से निकली उसको उन्होंने बाहर एकरीन पर एक विशेष प्रकार का मसाला लगाकर निकलते हुए देखा तो सिद्ध हुआ कि चीज अन्तर से निकली वह भारी थी। जो चीज भारी होगी उसे जमीन की कशिश खींचेगी। अब प्रश्न उठता है कि वह भारी क्यों हुई ? उसका क्या अपना कोई वजन है ? नहीं ! क्यों कहता हूं कि उसका वजन है, क्योंकि जब मैं प्रकाश और शब्द को देखता हुआ दोनों को छोड़ जाता हूँ तो मेरी जो अवस्था होती है. उसमें हैपना ही नहीं रहता। अंश कुल में मिल जाती है। अगर वह प्रकाश में भी जायेगी तो जमीन की कशिश प्रकाश को नहीं खींच सकती इसलिये जो प्रकाश का ध्यान करते हुए मरते हैं यद्यपि वे सदा के लिए पार नहीं जाते मगर जमींन उन्हें नहीं खींच सकती अगर कोई चाहता है कि मैं आवागवन में न आऊँ तो उसे क्या करना चाहिये ? उसे किसी साँसारिक पदार्थ या चीज से लगाव नहीं होना चाहिए। सुरत भारी क्यों होती है ? क्योंकि व्यक्ति का लगाव स्थूल चीज, मां बाप, बहन भाई, बेटा, बेटी, स्त्री, मकान, फकीरचन्द का देह, और मन्दिर राम का देह जो दशरथ के घर पैदा हुआ था, अयोध्या, कृष्ण का देह, जो गोकुल में पैदा हुए, मुहम्मद जो मक्का में पैदा हुए हैं तो जब उसकी सुरत शरीर से निकलेगी तो भारी होगी। भारी होने के कारण जमीन की कशिश अपनी Gravity से बाहर नहीं जाने देगी जो इच्छा है करो। लाख तुमने किसी गुरु की सेवा की हुई है और भक्ति की है वे इस चक्कर से नहीं निकल सकते। इस वास्ते

ऋषियों ने शब्द ब्रह्म अर्थात शब्द का साधन बताया है। अगर एक एक आदमी प्रकाश को भी देखता और शब्द को भी सुनता है अगर उसका मोह स्थूल पदार्थ से है तो जब वह शरीर छोड़ेगा उसका सूक्ष्म शरीर भारी होगा और उसे दूसरा जन्म अवश्य मिलेगा। उसे कोई शक्ति नहीं रोक सकती। यह विज्ञान सिद्ध करता है।

इसके अतिरिक्त बाबा साबनसिंह जी कहा करते थे जिनको हरिद्वार से प्रेम है वे हरिद्वार की मछलियाँ बनेंगे। अब जिनको व्यास या होशियारपुर से प्रेम है वे वहीं पैदा होंगे अन्त मता सो गता मुझे तो इस एक विचार से असलियत और सच्चाई का पता चला राय सालिगराम जी महाराज जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है, अपनी प्रेम वाणी में साफ लिख गये कि अन्त समय पर फिल्म चलती है, जिस गुरु से नाम लिया हुआ है वह भी आ जाता है, शब्द भी सुना देता है। कुछ समय ऊँचे लोकों में रहने के बाद जब कोई सन्त सतगुरु आयेगा उसका फिर जन्म होगा और शेष कमाई पूरी करेगा यही बात सनातन धर्म में लिखी है कि आखिरी आयु में सन्यास धारण करलो। सन्यासी को हुक्म हदायत है कि एक जगह तीन दिन से अधिक न रहे ताकि उसे उस जगह से मोह न हो जाये। सबका नियम एक ही है मगर हमारी बुद्धि में यह बात बैठती नहीं। यह मेरी बुद्धि में नहीं बैठी, मैंने सारी आयु खो दी।

कभि कभि ब्रह्म जीत जो होई,
नर्द लाल होम ब्रह्म घर सोई।

इसका भाव यह है कि सुरत प्रकाश में चली गई।

चौपड़ से बाहर नहिं होई।
निज घर अपना पाये न कोई।

इस निज धर में मुझे मार दिया। वह निज घर क्या हैं जिसे स्वामी जी और कबीर साहिब ने बताया है ? मैं सारी आयु ढूढ़त

रहा। जब तुम लोगों से पता चला कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर जाता है मैं तो होता नहीं, फिर मैं प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता हूँ। जब कभी उस चीज की तलाश करता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है तो फिर क्या हो जाता है ? जब मैं वहां जाता हूँ तो सब कुछ भूल जाता हूँ। न वहाँ मैं न तू, न राम न कृष्ण, और न गुरु न चेला। वह क्या अवस्था है, यह कहने सुनने की बात नहीं, वहाँ सुख है। मगर मेरा क्या परिणाम हो मुझे पता नहीं। मैं कोशिश करता रहता हूँ।

नथ खसम दे दूध

मुझे सन्तमत के भेद का पता लग गया, इसमें कोई सन्देह नहीं लेकिन वहां पहुंचना किसी के वश में नहीं। मुझमें अभी तक भी वहां ठहरा नहीं जाता। अगर मैं आपसे झूठ कहूं तो यह एक पाप और धोखा है।

मैं सोचता हूँ जब तू वहाँ सदा नहीं ठहर सकता तो लोगों को उपदेश क्यों करता है ? एक डाक्टर को किसी बीमारी के इलाज का पता है। वह कई बीमारों को ठीक करता है लेकिन हो सकता है कि वह उसी बीमारी में ग्रस्त हो जाय जिसका वह Expert है और मर जाये, मगर उसका इलाज तो गलत नहीं है। इसलिये जो कुछ मैंने समझा है वह मेरी नीयत अनुसार गलत नहीं है। मेरा क्या परिणाम हो, यह उसके हाथ में है मेरे हाथ में नहीं। मैं कोशिश करता रहता हूं। आज मस्तिष्क ठीक है शायद कल बिगड़ जाये। मैं क्या जानूँ कल क्या होगा बातें करना और भाषण देना सीख गया हूं, ऊट पटाँग बातें करता रहता हूँ।

माया ब्रह्म खिलाड़ी दोई।
खेलें इन नरदन के सोई।

मैंने आपको बता दिया कि नर्द क्या चीज है। आपको साधन

करने से पता लगेगा। आपको प्रमाण दे दिया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। जब से पता लगा कि मेरे अन्तर जो कुछ भी प्रकट होता है चाहे प्रकाश, शब्द, रंग रूप उसकी साक्षी कोई और चीज है। वह और चीज सुरत है। वह इस शरीर में फँसकर रोती और चिल्लाती है कभी खुशी (आनन्द) लेती है और दुख सुख भोगती है—

भरमे नर्द पिटे और कुटे।
दुख उनका कोई नहीं सुने।
सभो नर्द पछतावें दम दम।
कैसे छूटें इनसे अब हम।
करे फर्याद, दाद नहिं पावें।
रोवें झीखें ओर चिल्लावें।

क्या आप लोग ऐसा नहीं करते? आज लड़की का विवाह नहीं हुआ, अठाईस साल की होगई घर नहीं मिलता। किसी के पुत्र नहीं है, अमुक बीमार है। हम सब इन्हीं झगड़ों में फँसे हुए हैं मैं या आप वरो हैं। किसी की कोई नहीं सुनता।

बार बार भरमे चौरासी।
कोई न काटे उनकी फाँसी।
श्रुति सिमृ और वेद पुरान।
सब ही मारें इनकी जान।

अब तुम सोचो, मैं ब्रह्मण के घर पैदा हुआ। वे कहते हैं श्रुति वेद और पुराण सब जीवों की जान लेते हैं। मैं रोया करता था कि कहाँ फँस गया। अब मैं कहता हूं कि यह ठीक है। हमें जितने कर्म दान पुण्य धर्म बनाये जाते हैं यह सब काल की फांसी है। अगर तुम आज इस नीयत से दान देते हो कि तुम्हें उसका फल मिले तो तुम्हें उसका फल लेने के लिए दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। तुम परोपकार इस विचार से करते हो कि तुम्हें उसका बदला मिले। उसका बदला

लेने के लिए तुम्हें फिर आना पड़ेगा। इस वास्ते सब काम निष्काम होना चाहिये जिस प्रकार हम टट्टी, पेशाव जाते हैं उसी प्रकार दान देना, सहायता करना हमारा कर्तव्य है। उसका बन्धन नहीं होता इसका प्रमाण मेरे पास अपना जीवन है। मुझे मन्दिर, भंडारों गोपालदास, नरायनदास कभी स्वप्न में नहीं आये। मुझे अपने सखे से कितना प्यार है यह कभी स्वप्न में नहीं आया अगर रेलगाड़ी, तार, बीबी साहिबा, माता-पिता और कभी-कभी लड़का ये मेरी जान अभी तक भी स्वप्न में आजाते है। इससे क्या सिद्ध हुआ ? कि इनके स.थ मैंने मोह किया है। अपने भूखे पेट के लिए मोह और प्रेम किया हुआ, उसकी फोटो मेरे मस्तिष्क पर बनी हुई है। जब सुरत स्वप्न में अन्तर चली जाती है तो वे फिल्में बनती हैं। ऐसा नहीं कि वे मरे हुए आते हैं लेकिन वे संस्कार जो मेरे मस्तिष्क पर पड़े हुए हैं वे आते हैं। अब जो काम मैं करता हूं यह निष्काम है। इसलिए इसका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हजारों आदमियों से मिल कर आया हूँ, अब तक तुम मेरे सामने हो, प्रेम, हँसी से बात करता हूँ जब तुम चले जाओगे I will forget you, who you are ? I do'nt know. आप कौन हैं मुझे पता नहीं।

माया काल बिछाया जाल।
अपने स्वारथ करें बेहाल।

जिस प्रकार काल ने संसार पैदा करके खुशी ली है उसी प्रकार हम सन्तान पैदा करके खुशी लेते हैं। हम प्रातः से सायं तक क्या करते हैं ? सोचो; अपने आप से पूछा करो। मैं अपना कर्म भोगता हूँ किसी पर उपकार नहीं करता। अगर आप समझते हैं कि मेरी शिक्षा गलत है तो आप मत आया करो न मेरी कोई किताब पढ़ा करो।

कोई गोट न जावे घर को।
यहाँ ही खेल खिलावें सब को।

वह गोट क्या है ? वह सुरत है। मगर आप अमल से नहीं जान सकते तो बुद्धि से तो समझ सकते हो। सुरत वह चीज है जो हमारे अन्तर प्रकाश को देखती, शब्द को सुनती और मन के खेलों को देखती है। उसका अपना आप घर है। जब वह इस संसार को भूल जाती है तो वह, वह हो जाती है जो पहले थी। इस वास्ते सन्त कहते हैं कि वह मालके कुल हीं मानव के अन्तर मौजूद है। अगर तुम मालिक की सेवा करना चाहते हो तो इन्सान, इन्सान की सेवा करे क्योंकि मानव के अन्तर ही वह सच्चा मालिक सुरत रूप में रहता है। सब से पहले उनकी सेवा करो जिनको प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगाया हुआ हैं। तुम्हारे बूढ़े माँ–बाप, बिधवा बहन, कोई गरीब सम्बन्धी उनकी सेवा करो वह सच्चे मालिक की सेवा है।

सन्त पुरुष देखा यह हाल।
काल हुआ जीवन का काल।
अपने स्वाद जीव भरवावे,
पता हमारा काहु न बतावे।

स्वामी जो को पता होगा कि उन्होंने क्या समझा ? जब मुझे कष्ट होता है तो मैं अपने आपको अलग समझकर उस कष्ट को अपने से अलग समझता हूँ। हर एक आदमी ऐसा ही समझता है या कि नहीं। ऐसे ही उस व्यक्ति परमतत्व का मुझे पता नहीं लगा। जब कभी मैं वहाँ जाता हूँ तो न 'मैं' न तू रहता है, न मालिक न ब्रह्म, न गुरु न चेला। क्या रह जाता है ? एक Owness आ जाती है। यही दातादयाल ने कहा था—

फकीरा ! रूप तेरा अति प्यारा।

मेरा वह रूप कौन सा था ? वह रूप जो मेरे अन्तर प्रकाश को

देखता और शब्द को सुनता है। वह मेरा और वही तुम्हारा रूप है, वह मुझे ज्ञान देने के लिए समझाते थे लेकिन मेरी समझ में नहीं आता था। आपकी दया से मेरी समझ में बात आ गई।

फकीरा ! रूप तेरा अति प्यारा।

तुम अपने आपको फकीर समझो। केवल फकीरचन्द का रूप ही अति प्यारा नहीं है तुम भी फकीर हो। तुम्हारा रूप सबसे ऊँचा है मैंने तुम्हें सतसंग में बहुत कुछ समझा दिया।

तू सतचित आनन्द की मूरत, तू तीनों से न्यारा।

सत शारीरिक बोधमान को, चित्त मन के बोधमान को और आनन्द आध्यात्मिक बोधमान को कहते हैं। मैंने आप को बताया कि मुझे आप लोगों की दया से पता लगा। पहले मैं अपने आपको शरीर फिर मन और फिर रूह समझता था। अब जब पता लग गया तो मैं न्यारा भी हूँ और इनमें भी हूं।

तेरी गती मती बुद्धि न जाने अटक रहे मझधारा।

असल में जो तुम हो जैसा मैंने आपको बताया है वहां तो बुद्धि नहीं जाती। बुद्धि कुछ नहीं कर सकती।

कर्म किया सत की चढ़ा घाटी चित्त में विवेक विचारा।

मैंने क्या कर्म किया ? दाता के चरणों में जाकर उनकी सेवा की जो कुछ उन्होंने आज्ञा दी वैसा किया। उससे क्या हुआ ? विवेक और समझ आ गई कि न तू शरीर है न मन, न प्रकाश। तू तीनों से न्यारा है।

कर्म किया सत की चढ़ा घाटी चित्त में विवेक विताए।
सत चित आनन्द विलासा चहुं दिशा हर्ष पसाए॥

जब मानव को ज्ञान हो जाता है तो उसे जीवन मुक्त अवस्था आ जाती है। क्यों ? क्योंकि वह संसार में रहता हुआ फँसता नहीं इसलिये वह प्रसन्न रहता है। कोई मरे कोई जिये किसी को लाभ

हो चाहे घाटा पड़े वह चिन्ता नहीं करता। इसका भाव यह है।

तीन त्याग चौथे को धारे सो सबका आधारा।

कौन? वह जो तुम्हारे अन्तर प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है उसका पता नहीं लगता था। ऐ सतसंगियो! जो मुझे गुरु मानते हैं। मेरे पास देने को कुछ नहीं, मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि जिस प्रकार मैं आपकी दया से आजाद हुआ मालिक करे तुम भी आजाद हो जाओ। इसके सिवाय मेरे पास कुछ नहीं।

द्वन्द जगत त्रिपुटी की त्रिकुटी छोड़ चला घरबारा।

जब से विवेक हो गया है तबसे घरबार छोड़ जाता हूँ। मेरा घर मेरा शरीर है। मैं जानता हूँ कि यह मेरा घर नहीं है। मन भी मेरा घर नहीं है। मैं इन सबसे अलग हूँ।

नहीं तू दोय नहीं तीन चार है नहीं है सहस्त्र हजारा।
एक एक है एक एक है, जाने जानन हारा।

केवल इस विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मेरा जीवन बदल गया। इसी परदे को रखकर इन महात्माओं, गुरुओं, धर्मों, पंथों, पण्डितों और मौलवियों ने हमें लूटा है और मूर्ख बनाया है। हम लोग मूर्ख बनने में प्रसन्नता लेते हैं।

राधास्वामी रूप लख अपना तू व्यापक संसारा।

इस रूप का पता नहीं लगता था। इसका पता तुम लोगों से लगा। मैं किसी बात का दावा नहीं करता। हो सकता है जो कुछ मैंने समझा हो सारा गलत हो। मुझे मान प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं है। मैं पिछले जन्म के कर्म भोगता हूं और खुश रहता हूं। दाता! आपने काम दिया था कर चला। मैंने ठीक किया या गलत मेरी नीयत साफ है। ये बिचारे आते हैं इनकी मनोकामनाओं को तू ही पूर्ण कर। मेरे पास शुभ भावना के और कुछ नहीं। जिस जिस इच्छा को लेकर ये आये हैं इनकी इच्छायें पूर्ण हों। राधास्वामी।

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क —राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ । उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री प्रभूदयाल मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—
कार्यालय
मनुष्य बनो
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 1210
Sri Vitthal Arjunrao
Gouli gudda Banswada
To & P.O. Banswada
Dist. Nizamabad A.P.

सम्पादक — प्रद्युम्नपाल मीतल
व्यवस्थापक व प्रकाशक — श्रीमती सुधा मीतल, शिव भवन, अलीगढ़

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh